को प्राप्त महानुभाव को सर्वत्र सबमें श्रीकृष्ण ही श्रीकृष्ण दृष्टिगोचर होते हैं।

ऊपर सिद्ध किया जा चुका है कि जड़ प्रकृति और आत्मतत्त्व—दोनों श्रीकृष्ण के रूप हैं; अतएव जिस विश्वरूप में सब प्राकृत तत्त्वों का समावेश है, वह भी श्रीकृष्ण का रूप है। वेणुधारी द्विभुज श्यामसुन्दर रूप में उनकी वृन्दावन लीला तो भगवदीय है ही।

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।।२०।।

त्रैविद्याः=तीनों वेदों में वर्णित सकाम कर्मों को करने वाले; **माम्**=मुझे; **सोमपाः**=सोम रस को पीने वाले; **पूत**=पवित्र हुए मनुष्य; **पापाः**=पापों से; **यज्ञैः**=यज्ञों के द्वारा; **इष्ट्वा**=पूजकर; **स्वर्गतिम्**=स्वर्ग की प्राप्ति के लिए; **प्रार्थयन्ते**=प्रार्थना करते हैं; **ते**=वे; **पुण्यम्**=पुण्य; **आसाद्य**=प्राप्त होकर; **सुरेन्द्रलोकम्**=इन्द्रलोक को; **अश्नन्ति**=भोगते हैं; **दिव्यान्**=दिव्य; **दिवि**=स्वर्ग में; **देवभोगान्**=देवभोगों को।

अनुवाद

तीनों वेदों में वर्णित कर्मों को करने वाले, सोमरस पीने वाले पापरहित मनुष्य स्वर्गप्राप्ति के लिए यज्ञों द्वारा मेरी अप्रत्यक्ष रूप से आराधना करते हैं। वे अपने पुण्य से स्वर्गलोक को प्राप्त होकर देवताओं के भोगों को भोगते हैं।।२०।।

तात्पर्य

त्रैविद्याः शब्द ऋक्, साम एवं यजुः नामक तीनों वेदों का वाचक है। वह ब्राह्मण, जिसने इन तीनों वेदों का स्वाध्याय किया हो, त्रिवेदी कहलाता है और जिसकी इन तीनों वेदों से उपलब्ध ज्ञान में प्रीति हो, वह मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा पाता है। दुर्भाग्यवश, वेदों के ऐसे बहुत से महान् विद्वान् हैं, जो उनके स्वाध्याय के परम तात्पर्य को नहीं जानते। अतएव श्रीकृष्ण ने इस श्लोक में घोषित किया है कि त्रिवेदियों का परम लक्ष्य मैं ही हूँ। सच्चे त्रिवेदी श्रीकृष्णचरणारविन्द की शरण लेकर उनकी प्रीति के लिए विशुद्ध भक्तियोग में तत्पर रहते हैं। इस भक्तियोग का आरम्भ **हरेकृष्ण** महामन्त्र के कीर्तन और श्रीकृष्णतत्त्व को जानने के लिए प्रयत्न करने से होता है। दुर्दैववश, जो केवल नाममात्र का वेदाध्ययन करते हैं, वे इन्द्र, चन्द्र आदि देवताओं की प्रसन्नता के लिए यज्ञ करने में अधिक आसक्त हो जाया करते हैं। इस प्रकार के प्रयास से देवोपासक प्रकृति के अधम गुणों के दोष से निःसन्देह शुद्ध होकर महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, आदि उच्च लोकों को प्राप्त हो जाते हैं। इन स्वर्गीय लोकों में इस लोक की अपेक्षा इन्द्रियतृप्ति के लक्ष-लक्ष गुणा श्रेष्ठ साधन सुलभ हैं।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते।।२१।।

ते=वे; **तम्**=उस; **भुक्त्वा**=भोग कर; **स्वर्गलोकम्**=स्वर्ग को; **विशालम्**=